12

क्रूस को कथन

मत्ती 27; मरकुस 15; लूका 23; यूहन्ना 19

''इसने औरों को बचाया, और अपने आप को नहीं बचा सकता। यह तो 'इस्राएल का राजा' है। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें'' (मत्ती 27:42)।

यीशु के क्रूस पर से कहे शब्दों को कौन भूल सकता है, और क्रूस *की ओर* बातें करने वालों की सराहना कौन कर सकता है? जब हम अपने आप को सुनते हैं तो हम परेशान, निराश होते और खीझते हैं कि हमने यह क्या कह दिया।

यीशु को जब वह क्रूस पर था, क्या कहा गया था?

चुनौती। लोगों ने कहा, ''यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ'' (मत्ती 27:39, 40)। यीशु के सताने वालों ने कहा, ''... क्रूस पर से उतर आए कि हम देखकर विश्वास करें'' (मरकुस 15:32)। यीशु यदि क्रूस पर से उतर आता तो भी उन्होंने विश्वास नहीं करना था; वे उसे फिर क्रूस पर चढ़ा देते! मांग करते रहने वाले लोग विश्वास नहीं कर सकते। ढीठ पापी विश्वास नहीं कर सकते। कोई इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि लाज़र को यीशु की सामर्थ से जिलाया गया था (यूहन्ना 11)। परन्तु इस जी उठने ने मसीह की ओर बढ़ते मृत्यु के कदमों में फुर्ती ला दी। जब हम विश्वास नहीं करना चाहते तो आश्चर्यकर्म भी हमारी सहायता नहीं कर सकते।

जादू। मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाए गए दो जनों में से एक ने कहा, ''क्या तू मसीह नहीं? तो फिर अपने आप को और हमें बचा'' (लूका 23:39)। एक अर्थ में वह कह रहा था, ''हमें जादू की छड़ी से चकित कर।'' यीशु कोई जादूगर नहीं है। यह एक बोध है, जिसमें कोई भी परमेश्वर की तरह अनुत्तेजित नहीं है। लोग उत्तेजना पैदा करते हैं। क्रूस के निकट जो लोग थे, वे भी देख, सुन या सीख नहीं पाए। उन्होंने कोशिश की कि कुछ हो जाए। जो भी उन्होंने कहा या किया वे उसमें नाकाम ही रहे। आज लोग उत्तेजना को बढ़ावा देते हैं। वे चाहते हैं कि ''पवित्र मूर्ख उछलें''। वे आंखों से सुनना और भावनाओं से सोचना चाहते हैं। पश्चाताप न करने वाले डाकू पर कई आरोप थे, जिनमें परमेश्वर की निन्दा का आरोप भी था (लूका 23:39)। उसने मसीह को ताने मारे और मज़ाक भरे अन्दाज़ में उद्धार के लिए कहा। मर रहा व्यक्ति इतना ढीठ कैसे हो सकता है?

अपना सबसे बड़ा शत्रु मनुष्य स्वयं है। यदि यीशु अपने आप को बचा लेता तो क्या होता? फिर मनुष्य नष्ट हो जाता। यीशु ने हमें बचाने के लिए क्रूस पर रह कर अपनी बलि दे दी।

बदलाव। एक डाकू ने पश्चाताप नहीं किया था, परन्तु दूसरे ने कहा, ''मेरी सुधि लेना''

(लूका 23:42)। क्रूस लोगों को या तो अच्छे बनाता है या बुरे। एक डाकू के स्वार्थी जीवन की समाप्ति उसकी स्वार्थी मृत्यु से हुई। दूसरे डाकू ने मन फिरा लिया। उसने क्षमा की विनती करते और हालात को पीछे धकेलते हुए यीशु पर ध्यान लगाया। पृथ्वी पर यह डाकू एक ही आदमी था, जिसे समझ आया कि क्या हो रहा है। उसने महसूस किया कि उसने बुरा जीवन बिताया था और उसने बदलाव की आवश्यकता समझी। सुसमाचार का संदेश ''अच्छी खबर'' बनने से पहले ''बुरी खबर'' होना आवश्यक है।

तमाशबीन। औरों ने कहा, ''वह तो एलिय्याह को पुकारता है'' (मत्ती 27:47-49; देखें मरकुस 15:36)। तमाशबीन खतरनाक होते हैं। यीशु द्वारा परमेश्वर को ऊंचे स्वर में पुकारने के बाद तमाशबीन लोगों ने वही किया, जो अक्सर ऐसे लोग करते हैं। उन्होंने सब कुछ मिला दिया! यीशु के दिल की गहराई की आवाज़ सुन कर अन्धविश्वासी लोगों ने एल्लियाह को परमेश्वर बना दिया। तमाशबीन (रोमांच चाहने वाले) देखते सब कुछ हैं पर ध्यान किसी बात पर नहीं देते। जो कुछ होता है, वे उसे देखते हैं, पर समझते कुछ नहीं। उन सब लोगों ने इतना अवश्य किया कि उन्होंने यीशु को सिरका दिया! कितनी बुरी बात है!

जुआरी। यीशु के वस्त्रों के बारे में सिपाहियों ने कहा, ''हम इनको न फाड़ें, बल्कि इन पर चिट्ठी डालें'' (यूहन्ना 19:24)। यीशु हमारे पापों के लिए मर रहा था, जबकि लोग उसके वस्त्रों के लिए जुआ खेल रहे थे। क्रूस पर कोई कठोर मन व्यक्ति ही जुआ खेल सकता था।

हम में से हर कोई अपनी जान किसी वस्तु के लिए बेच रहा है। मनुष्य सारे संसार को प्राप्त कर लेने के बावजूद अपने प्राण की हानि कर सकता है (16:24-26)। लोगों ने जुआ खेला जबकि परमेश्वर का पुत्र उनको बचाने के लिए मर रहा था! लोगों की दिलचस्पी उसकी जान के बजाय उसके वस्त्रों में थी। उनकी नज़र में चीज़ों का महत्व अधिक था। क्या हम उनसे थोड़ा अलग हैं? क्या हम कुछ बेहतर हैं? हम सब चीज़ों का मूल्य तो जानते हैं पर कीमत किसी की नहीं। यीशु स्वर्ग में वापस चला गया और उसके वस्त्र जल्द ही अलोप हो गए। आत्मिक मूल्य बने रहते हैं, जबकि अधूरी चीज़ें मिट जाती हैं।

निष्कर्ष का समय। एक सूबेदार ने जो यह सब होते देख रहा था, कहा ''सचमुच यह मनुष्य, परमेश्वर का पुत्र था'' (मरकुस 15:39)। युद्ध में सख्त हुए सिपाही का यह प्रतिदिन का काम था; परन्तु शायद उसने अपने काम पर गर्व किया। उसने पल-पल पर नज़र रखी; उसने यीशु का एक-एक शब्द सुना। यीशु दूसरों से अलग था; यह क्रूस अलग था। अनजाने में इस ईमानदार आदमी ने अपने आप को अमर कर दिया। जो कुछ दुनिया की भीड़ को और उसके शत्रुओं को बिल्कुल नज़र नहीं आया, वह इस आदमी ने देख लिया। उसने एक ही निष्कर्ष निकाला जो ईमानदारी से निकाला जा सकता है। यीशु या तो परमेश्वर का पुत्र है या नहीं है। इस सूबेदार ने जो निष्कर्ष निकाला हमें भी निकालना चाहिए।

हम सब अपने आप को क्रूस के निकट खड़े पाते हैं। वहां हम कितने मिले-जुले लोगों का समूह देखते हैं, जिनमें शत्रु, जिज्ञासु, अनजान, दर्शक, डरे हुए चेले और प्रियजन थे! यीशु ही अकेला था, जिसने परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन बिताया।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!